अंतरा-शब्दशक्ति

रिश्ते और एहसास

लघुकथा एवं काव्य संग्रह

चारु शिखा

रिश्ते और एहसास

(लघुकथा एवं काव्य संग्रह)

चारु शिखा

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-47-6

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © चारु शिखा

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

“Rishte aur Ehsas’ by ‘Charu Shikha’

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

समाज का आईना

एक लेखक या लेखिका सिर्फ़ एक लेखक या लेखिका होती है क्योंकि अन्य विषय उसे वह आलौकिक सुख नही दे सकते जो उसे लेखन से प्राप्त होता है। उसकी आत्मसंतुष्टि केवल उसका लेखन है जिसके अंतर्गत वह अपनी नज़रों से दुनिया को देखता है और साथ ही निकलता है ऐसे सफर पर जिसमें वो ढूंढता है दिन प्रतिदिन नए स्वाद अपनी लेखनी के लिए, जो उसे मिलते है अपने ही समाज में अपनो के बीच। हर वो बात जो मन की परतों को छू जाए या फिर मिले कोई ऐसा जो मौन स्वर में फिर कहे कि मुझे भी लिखो, मुझे भी जियो अपने शब्दों अपनी कल्पनाओं में जिससे मैं पहुँच जाऊ समाज के बीच और लोग महसूस कर सके मेरा दर्द तुम्हारे माध्यम से। समाज का आईना लिखने वालें चुनिंदा लेखकों में से एक हूँ मैं भी..

मैं कौन हूँ??

एक आम पारिवारिक स्त्री ..
किंतु फिर भी नहीं हूँ इस समाज से अलग
क्योंकि कहीं न कहीं मैं भी इसका हिस्सा ही हूँ
और मेरा फ़र्ज़ है अपने समाज को एक दिशा दिखाना
इसलिए मेरी रचनाएँ एक विवशता है
समाज में उपस्थित हर उस नारी की
जो जीकर भी नही जी रही,
अपितु मर रही है अपने परिवार के लिए,
परन्तु वो सुनती है "ये तुम्हारा मायका नही है"
जबकि वो सब लड़कपन भूल चुकी होती है
घर के हर सदस्य की जरूरतों को पूरा करते करते,..।
मेरी कविताओं को उन्ही महिलाओं के कटे पंख लगे हैं,
जो आज पंखविहीन हैं, उपेक्षित हैं, अपने ही परिवार में।
फिर भी वो जी रही है खुशी से...
उस पौधे को देखकर जो उपजा है उसकी ही माटी से...
कि शायद कल उस पौधे को पेड़ बनाकर
उसकी छाँव में बेफिक्री से आँखे मूँद ले ..
मेरी रचनाएँ संदेश हैं उन सबको
जो स्त्री को देवी कहते हैं ..

मैं कहती हूँ तुम हमें देवी न बनाओ
बस रहने दो औरत ही ताकि हम जी पाएं अपने वजूद को ..
मेरी रचनाएँ शिकायत हैं उन शोषित लोगों की
जिनकी चीख शायद दबी हुई हो किसी मजबूरी के नीचे,
और उन दम तोड़ रही हों हौले हौले..
मैं क्या हूँ?
एक औरत हूँ और लिखती हूँ
समाज को ताकि कल्पनाओं में मिले लोगों को
हक़ीक़त का धुंधला चेहरा दिखा सकूँ
मैं औरत हूँ पर लिखती हूँ
क्योंकि प्रतिनिधि हूँ अपने ही जैसे कुछ लोगों की,....

चारु शिखा

अनुक्रमणिका

लघुकथा

1.	खुशी का दिन है	5
2.	बंधन	6
3.	साड़ी	7
4.	किराये का मकान	8
5.	मौन	9
6.	अंगूठाछाप	10

कविता

1.	बरसात	11
2.	अहसास	12
3.	आखिर क्यों?	13
4.	मैं कौन हूँ?	14
5.	सबकी लाड़ली अवनी	15
6.	सुख की तलाश	16

खुशी का दिन है

अम्मा बिटिया हुई है, चेहरे पर खुशी और लगातार फोन की घंटी का बजना | पूजा भी खुश है कि उसने जो मांगा "माता रानी ने दिया" एक बेटा पहले ही था अब 8 वर्ष बाद बेटी का आगमन | हफ्ते भर बाद अस्पताल से घर आना, बेटा जहाँ नार्मल हुआ था बेटी आप्रेशन से, कुछ दर्द और कुछ चुभन | समय गुजरा और लोगो का आना-जाना, बच्ची को आशीष देना, सासू जी खुश थी दुबारा दादी जो बनी थी| पर उनका कहना "मजबूरी" है नही तो कामवाली की जरूरत नही अभी बच्चा छोटा है| बार-बार मजबूरी शब्द कानो मे पडता और पूजा स्वंय से पूछती! "मजबूरी है" या "जरूरत" अपना फर्ज और दायित्व तो उसने हमेशा निभाया, आज अगर थोडे आराम की जरूरत है तो उसे मजबूरी क्यो कहाँ जा रहा? जबकि स्वंय उनकी बेटी के दोनो बच्चे आपरेशन से हुए तो क्या वो नही समझती तकलीफ और चुभन |

बंधन

गीता और सुधीर के विवाह को कुछ ही समय हुआ था। एक दूसरे को अभी ठीक से समझा तक नहीं था | विवाह के बाद कही जाना ही न हुआ जो साथ समय मिलता गीता भी रस्मो-रिवाजों को समझने मे लग गई। धीरे-धीरे वक्त गुजरता गया, आज भी सुधीर अपनी पत्नी को कहा जान पाया ? उसे तो बस एक घरेलू औरत चाहिए थी, जो उसका घर संभाले, माता- पिता की सेवा करें और फिर उसकी इच्छाओं का भी पूरा ध्यान रखे। गीता जो इस बंधन मे बंधी अपने हर काम को अपना दायित्व व फर्ज समझ के करती | आज चाह कर भी मुक्त नही हो पा रही। जो बंधन स्नेह का नही बल्कि उसके दायित्व, संस्कार और सीख का है|

साड़ी

माँ, पूजा का समय क्या है? मै तैयार हो जाऊंगी समय से बक्सा खोला और वो साड़ी निकाली जो अपनी याद से माँ को पहनते देखा। तब नही समझा कि वो घर और हमारी जरूरतें पूरी करते करते अपने लिये कुछ न ले पाती थी और पूछने पर कहती बेटे पूजा मे लाल रंग की साड़ी ही पहनते है। आज मेरे पास ढेरों साड़ियाँ है पर माँ की वही लाल साड़ी सबसे अनमोल और प्रिय है। और सबसे खूबसूरत भी |

किराये का मकान

माँ कितना चलना है अभी, नन्ही पलक ने पूछा, बस बेटा आ गये। पायल ने पर्स से चाबी निकाली और ताला खोला माँ अब हम यहाँ रहेंगे ? पायल ने नन्ही पलक को गोद मे लिया और हाँ मे जबाब दिया। पलक थकान की वजह से सो गई और पायल के कानों मे रितेश के कहे अपशब्द और मारते हुए घर से निकालते हुए कहना कि नहीं जरूरत तुम्हारी कही भी जाओ यहाँ लौटकर मत आना । आज वो संतुष्ट है ये सोचकर किराए का मकान ही सही पर अब यही उसका घर है जहां वो सुरक्षित है।

मौन

जरा सी बात पर कितना सुनाया, कोई ऐसा करता है? अपने आसुओं को पोछते हुए पुष्पा ने खुद से पूछा। पुष्पा सरल और परिवार को साथ लेकर चलने वाली। विवाह के बाद पहली "राखी" उसने अपने पति से सिर्फ इतनी इच्छा व्यक्त की मायके हो आए राखी है। और उसके पति का ये कहना, "मेरी भी बहने आएगीं नही जाना है" । पुष्पा ने सोचा ही नही था की वो मना करेगा। सास ने कहा - "जो पति कहे वही करो हम क्या कर सकते है? कितना रोई वो आईने के सामने आज भी राखी का त्योहार है और वो मौन। शायद पति खुद कहे या वो समझे इसी का इंतजार।

अंगूठाछाप

विजय खुश है उसका बेटा ६५% अंकों के साथ दसवीं मे पास जो हुआ। दिन-रात मेहनत करके पैसा जोड़ा, ताकि उसका बेटा पढ़लिखकर अच्छी नौकरी करें। समय पंख लगाकर उड़ गया, आज उसका बेटा दसवीं भी पास कर चुका एक चरण पूरा। मिठाई का टुकड़ा बेटे ने पिता को खिलाया और कहा- आप चिंता न करें जब तक आपका हाथ मेरे सर पर है मैं हार नही सकता। विजय की आँखों मे खुशी के आँसू और मन ही मन कहते हुये मैं अंगूठाछाप सही पर मैं पूरा प्रयास करुंगा कि मेरे बाद मेरे बेटा अच्छा जीवन जिए, कोई उसे अँगूठाछाप न कहें ।

बरसात

आज फिर काले मेघ है,
हल्की बरसात है,
दिन ही काली रात है,
इस दिल में किसी की याद है,
एक प्याला गर्म चाय की दरकार है,
पर बनाए कौन ये बडा सवाल है,
कोई मशगूल है बातों में,
कोई खेल मे उलझा है,
हमारी न पूछो यारों,
ये दिल यादों की बारात में उलझा है,
हमने तो शब्दों में पा लिया उसे,
वो हमारी खामोशियों में उलझा है।

अहसास

वो दिन का दबे पाँव चले जाना
रात का चुपके से आना..
तारों की छाँव और खुले आकाश में
देर तक समय गुजारना
बहुत कुछ कहना उनसे,
चुपचाप उनको निहारना,
वक्त का एक बार फिर
तेजी से फेरा लगाना..
रात को सोना चाहना
और
आँखों की कोर से
तकिये का भीग जाना।

आखिर क्यों ?

बचपन से लेकर आज तक
सुनती आयी हूं
औरत हो औरत की तरह रहो !
आदमी बनने की कोशिश न करना
लेकिनक्यों ?
और कब तक?
आखिर क्यों ?
पीछे चलती औरत
आगे नही बढ़ सकती..
हमारे विचार
हमारे संस्कार
हमारी परम्परा
आज भी यह प्रश्न अनुत्तरित है!

मैं कौन हूँ?

मैं कौन हूँ?
अक्सर ये प्रश्न उठता है
आज उसका जबाब मिल गया
मैं वो किरन हूँ,
जो अपने घर को रौशन करती हूँ...
मैं पुष्प हूँ,
जिसकी खुशबू से
घर-आँगन महकता है...
मैं मुस्कुराहट हूँ,
मुझे देखकर भी कोई हँसता है...
मैं याद हूँ,
जिससे घर का हर कोना सजता है...
मैं प्यार हूँ,
जिसने महसूस किया उसने पाया...
मैं अपने माता-पिता का आशीर्वाद हूँ
मैं अपने घर की पहचान हूँ...

सबकी लाड़ली अवनी

चूड़ी की खनक
पायल की छन-छन
बिंदियाँ की चमचम
लगे तू प्यारी हरदम
तेरी माँ- तेरी नजर उतारे ।

मेरी प्यारी सी "अवनी"
तू साथ रहना हरदम
पुकारे तू कहके अम्मा
सुन हूआ रोम-रोम आनन्दित
तू है मेरी परछाई

तेरे हर कदम पर नजर मेरी
अभी तू है छोटी सी,
बोली तेरी मीठी सी
मुस्काती है हर बार तू
"पिता की है लाडली",

भाईयो की "दुलारी",
बाबा-दादी की "फुलवारी",
देना सबको "खुशहाली"
तेरे आँचल मे हो
चाँद-सितारे
यही माँ देती दुआ है |

सुख की तलाश

सुख की तलाश मे हो आया..
वो कहाँ-कहाँ,
कभी मंदिर
कभी मज्जिद
कभी गुरूद्वारे....
मिल के भी न मिला उसे पूरा सुख,...
कोई कहता रत्न पहनो,
कोई कहता पूजापाठ करो..
कोई कहता हरि भजन करो
कोई कहता मदिरापान करो
कोई कहता नाचों-गाओं
कोई कहता लंगर लगवाओ
मै कहती...
तुम थोड़ा मुस्कुराओ
सारे आडंबर छोड़ो
अपने घर से रिश्ता जोड़ो
अपनो संग वक्त बिताओ
प्रभु याद मे दिन बिताओ
बच्चों संग मिल हल्ला बोलो
खुशियों को अपने
घर बुलाओ
कभी तो मिलने हमसे आओ,...

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- चारु शिखा
जन्म	- 20 जनवरी 1983
पति	- पुलकित सिंह
शिक्षा	- बी.ए. (लखनऊ विश्वविद्यालय)
विधा	- कविता, गीत, कहानी एवं लेख
प्रकाशन	- अमर उजाला कॉम्पेक्ट, डैली न्यूज (लखनऊ से प्रकाशि दैनिक), सुबह सवेरे (भोपाल) सहित क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय अखबारों में एक दर्जन से ज्यादा गीत, कविताओं, कहानियों एवं लेखों को समय-समय पर प्रकाशन।
मो.	- 8858948805
निवास	- उन्नाव, उत्तर प्रदेश

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-47-6
मूल्य 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com